• कविताएं...

ऐसा ही होता है...

ऐसा ही होता है
यहां हर सफर में
कुछ हिलते रूमालों
कुछ भीगी पलकों के
धुंधलाते अक्सों को
याद में रचाये
हर खुलती खिड़की से
कतरा कर नजरें हम
गुजरे हम इन कूचों से
सहमे सकुचाए
शायद ही लौटें अब
आप के शहर में
एक-एक कर पीछे
छूट गए सारे
वे दुआ सलामों के
बोझिल सम्मोहन
बर्फीली खोहों में
तोड़ चुके दम हैं
रोमिल खरगोशों-से
परिचित सम्बोधन
एक अजनबीपन ही
भरा हर नजर में
सांझ की ढलानों पर
इधर-उधर छितरी हैं
गीतों की ग़ज़लों की
नुची हुई पांखें
चुप्पी की किरचों की
आंकती चुभन है
बदहवास चिड़ियों
की भरी हुई आंखें
बहती है थकी हवा
डूब कर जहर में।

-राजेन्द्र गौतम

घास के फूल...

तुमने देखे हैं कभी घास के फूल
शायद नहीं देखे हों
वैसे भी गुलाब के फूल देखने वाले
घास के फूल नहीं देखते
देखने की चीज भी नहीं हैं
घास के फूल
लेकिन क्या तुम जानते हो?
कि पूरी सुंदरता पाने के बाद भी
होते हैं बांझ
तुम्हारे ये गुलाब के फूल
जबकि,
घास के फूल के गर्भ में
होते हैं बीज
आने वाले मौसम में फैलने वाली
हरियाली के बीज...

-पंकज सुबीर

• कहानी/-रबीन्द्रनाथ टैगोर

खोया हुआ मोती...

गतांक से आगे...

उसका चाचा दुर्गामोहन दूसरी तरह का व्यक्ति था। वह अपनी पत्नी के प्रेम को किसी भी मूल्य पर क्रय करने के पक्ष में न था और न ही वह प्रेम के विषय में चिड़चिड़े स्वभाव का था। फिर भी अपनी जीवन-संगिनी के प्रेम की प्राप्ति के लिए भाग्यशाली था।

जिस प्रकार एक सफल दुकानदार को कहीं तक बे-लिहाज होना आवश्यक है, ठीक उसी प्रकार एक सफल पति बनने के लिए पुरुष को कहीं तक कठोर स्वभाव बन जाना भी अति आवश्यक है। सानुरोध आपको मैं यह सीख देता हूं।

ठीक उसी समय गीदड़ों की चीख-पुकार जंगल में सुनाई दी। ऐसा ज्ञान होता था कि या तो वे उस स्कूल के अध्यापक के दाम्पत्य-जीवन के मनोविज्ञान पर घिनौना परिहास कर रहे हैं या फणीभूषण की कहानी के प्रवाह को कुछ क्षणों के लिए उस चीख-पुकार से रोक देना चाहते हैं। फिर भी बहुत जल्दी वह चीख-पुकार रुक गई और पहले से भी गहन अंधेरी और शून्यता वायुमण्डल पर छा गई, किन्तु स्कूल के अध्यापक ने पुनः कथा आरम्भ की-

सहसा फणीभूषण के बड़े व्यवसाय में शिक्षाप्रद अवनति दृष्टिगोचर हुई। यह क्यों हुआ? इसका उत्तर मेरी बुद्धि से परे है। संक्षिप्त में यह कि कुसमय ने उसके लिए बाजार में साख रखना कठिन कर दिया। यदि किसी प्रकार कुछ दिनों के लिए वह एक बड़ी पूंजी प्राप्त करके मण्डियों में फैला सकता तो सम्भव था कि बाजार से माल को न खरीदने के तूफान से बच निकलता, किन्तु इतनी बड़ी रकम का तुरन्त प्रबन्ध खाला का घर न था। यदि स्थानीय साहूकारों से कर्ज मांगता तो अनेक प्रकार की अफवाहें फैल जातीं और उसकी साख को असहनीय हानि पहुंचती। यदि पत्र-व्यवहार से भुगतान का ढंग करता तो रुक्का या पर्चे के बिना संभव न था और इससे उसकी ख्याति को बहुत बड़ा आघात पहुंचने की सम्भावना थी। केवल एक युक्ति थी कि पत्नी के आभूषणों पर रुपया प्राप्त किया जाए और यह विचार उसके हृदय में दृढ़ हो गया।

फणीभूषण मनीमलिका के पास गया। परन्तु वह ऐसा पति न था कि पत्नी से स्पष्ट और सबलता से कह सके। दुर्भाग्यवश उसे अपनी पत्नी से उतना घनिष्ठ प्रेम था जैसा कि उपन्यास के किसी नायक को नायिका से हो सकता है।

सूर्य का आकर्षण पृथ्वी पर बहुत अधिक है, किन्तु अधिक प्रभावशाली नहीं। यही दशा फणीभूषण के प्रेम की थी। उस प्रेम का मनीमलिका के हृदय पर कोई प्रभाव न था। किन्तु मरता क्या न करता, आर्थिक कठिनाई की चर्चा, प्रोनोट, कर्जे का कागज, बाजार के उतार-चढ़ाव की दशा, इन सब बातों को कम्पित और अस्वाभाविक स्वर में फणीभूषण ने अपनी पत्नी को बताया। झूठे मान, असत्य विचार और भावावेश में साधारण-सी समस्या जटिल बन गई। अस्पष्ट शब्दों में विषय की गम्भीरता बता कर डरते-डरते अभागे फणीभूषण ने कहा-तुम्हारे

पत्नी अपने पति को प्रायः जानती है, उसकी नस-नस से परिचित होती है, पर पति अपनी पत्नी के चारित्रय का इतना गम्भीर अध्ययन नहीं कर सकता। यदि पति कुछ गम्भीर व्यक्ति हो तो पत्नी के चरित्र के कुछ भाग उसकी तीक्ष्ण दृष्टि से बचाकर जान लेता है।

सम्भवतः यह सत्य है कि मनीमलिका ने फणीभूषण को अच्छी तरह न समझा। एक पाश्चात्य व्यक्ति का व्यक्तित्व मूर्ख स्त्री के अन्धविश्वास- जैसे जीवन और उसकी समझबूझ से प्रायः ऊंचा होता है....

आभूषण।

मनीमलिका ने न हां कही और न ना और न उसके मुख से कुछ ज्ञात होता था। उस पर गहरा मौन छाया हुआ था। फणीभूषण के हृदय को गहरा आघात पहुंचा। किन्तु उसने प्रकट न होने दिया। उसमें पुरुषों का-सा वह साहस न था कि प्रत्येक वस्तु का वह प्रतिदिन निरीक्षण करता। उसके इन्कार पर उसने किसी प्रकार की चिन्ता प्रदर्शित न की। वह ऐसे विचारों का व्यक्ति था कि प्रेम के जगत में शक्ति और आधिक्य से काम नहीं चल सकता। पत्नी की स्वीकृति के बिना वह आभूषणों को छूना भी पाप समझता था। इसलिए निराश होकर रुपये की प्राप्ति के लिए युक्तियां सोचकर कलकत्ता चला गया।

पत्नी अपने पति को प्रायः जानती है, उसकी नस-नस से परिचित होती है, पर पति अपनी पत्नी के चारित्रय का इतना गम्भीर अध्ययन नहीं कर सकता। यदि पति कुछ गम्भीर व्यक्ति हो तो पत्नी के चरित्र के कुछ भाग उसकी तीक्ष्ण दृष्टि से बचाकर जान लेता है। सम्भवतः यह सत्य है कि मनीमलिका ने फणीभूषण को अच्छी तरह न समझा। एक पाश्चात्य व्यक्ति का व्यक्तित्व मूर्ख स्त्री के अन्धविश्वास- जैसे जीवन और उसकी समझबूझ से प्रायः ऊंचा होता है। वह स्वयं स्त्री की भांति एक रोमांचकारी व्यक्तित्व बनकर रह जाता है और इसी कारण पुरुष की उन दशाओं में से किसी में भी फणीभूषण को पूरी तरह सम्मिलित नहीं किया जा सकता।

मूर्ख-अन्धा-जंगली-

मनीमलिका ने अपने बड़े सलाहकार मधुसूदन को बुलाया। यह दूर के रिश्ते से चचेरा भाई था और फणीभूषण के व्यापार में एक आसामी की देख-रेख पर नियुक्त था। योग्यता के कारण नहीं, बल्कि रिश्तेदारी के जोर पर वह उस आसामी पर अधिकार जमाये हुए था। काम की चतुराई के कारण नहीं, बल्कि रिश्तेदारी की धौंस में हर माह वेतन से भी अधिक रकम ले उड़ता था। मनीमलिका ने सारी रामकहानी उसके सामने वर्णन की और अन्त में पूछा-क्या करूं, नेक सलाह दो।

मधु ने बुद्धिमत्त और दूरदर्शिता के ढंग से सिर हिलाकर कहा-मेरा माथा ठनकता है, इस मामले में कुशल दिखाई नहीं देती।

सांसारिक बुद्धिहीन व्यक्तियों को हर कार्य में सन्देह ही दिखाई दिया करता है। उनको किसी काम में कुशल नहीं दिखाई देती।

फणीभूषण को रुपया तो मिलने से रहा, अन्त में तुम्हें आभूषणों से भी हाथ धोने पड़ेंगे।

सांसारिक समस्याओं और पुरुष तथा नारी के सम्बन्ध में जो मनीमलिका के अपने व्यक्तिगत विचार थे, उनके प्रकाश में मधु के निकाले हुए परिणाम का प्रथम भाग सम्भावित और दूसरा सत्य मालूम होता था। विश्वास उसके हृदय से जाता रहा था, सन्तान उसके थी ही नहीं। बाकी रहा पति, वह किसी गिनती में ही न था। अतः उसका सम्पूर्ण ध्यान अपने आभूषणों पर केन्द्रित था। इन्हीं से उसके हृदय की प्रसन्नता थी, ये ही उसको सन्तान के समान प्रिय थे। सन्तान को मां से छीन लीजिए फिर देखिए ममता की क्या दशा होती है। यही दशा मनीमलिका की थी। उसका यह विचार था कि उसके आभूषण पति के मनसूबों की भेंट हो जायेंगे।

फिर मुझे क्या करना चाहिए?

अभी मैके चली जाओ, सारे आभूषण वहां छोड़ आओ। चालाक मधु ने कहा।

इस प्रकार उसकी हांडी को भी बघार लगता है। यदि सारे नहीं तो कुछ आभूषण मधु को अपने हत्थे चढ़ने की भी आशा थी। मनीमलिका उसी समय सहमत हो गई।

बढ़ते हुए अन्धकार से स्कूल के अध्यापक पर भी गम्भीरता छा गई थी, किन्तु कुछ क्षणों के पश्चात उसने फिर वर्णन आरम्भ किया-

झुटपुटे के समय जबकि सावन की घटाएं आकाश पर डेरा जमाए हुए थीं वर्षा मूसलाधर हो रही थी, एक नौका ने रेतीली सीढ़ियों पर लंगर डाला। दूसरे दिन प्रातः घटाटोप अंधेरे में मनीमलिका आई और एक मोटी चादर में सिर से पांव तक लिपटी हुई नौका पर सवार हो गई।

मधु जो रात से उसी नौका में सोया हुआ था, उसकी आहट से जाग गया।

-जारी

• शायरी...

सवाल गूंज के चुप हैं जवाब आए नहीं
जो आने वाले थे वो इंक़लाब आए नहीं
ये क्या हज़र कि सफ़र की ज़रूरतें ही न हों
ये क्या सफ़र कि कहीं पर सराब आए नहीं

◆ ◆ ◆

वो एक नींद की जो शर्त थी अधूरी रही
हमारी जागती आंखों में ख्वाब आए नहीं
दुआ करो कि ख़िज़ां में ही चंद फूल खिलें
कि अब के मौसम-ए-गुल में गुलाब आए नहीं

◆ ◆ ◆

मुझे तो आज के कर्ब-ओ-बला से फ़ुर्सत कब
तुम उन की चाप सुनो जो अज़ाब आए नहीं।

-राशिद जमाल

◆ ◆ ◆

सरफरोशी की, लुटाया जिस्मो-जां, इल्मो-फ़ुनून
और बदले में ख़रीदा क्या, ख़रीदारी भी देख
लड़ रहे हैं और हम लड़ते रहेंगे तीरगी।
नूर के हिस्से का ये चकमक जिगरदारी भी देख।

-नूर मुहम्मद क़मूर

• मेरे वजूद से...

मेरे वजूद से आती है इक सदा मुझ को
की मेरे जिस्म से कर दे कोई जुदा मुझ को
मेरी तलाश का हासिल फ़क़त तहय्युर है
मैं खो गया हूं कहां ख़ुद नहीं पता मुझ को
मैं अपने जिस्म के अंदर सिमट के बैठा हूं
बुला रहा है कहीं दूर से ख़ुदा मुझ को
मैं तुझ को देखूं मगर गुफ्तुगू न कर पाऊं
ख़ुदा के वास्ते ऐसी न दे सज़ा मुझ को
वो लहजा अब भी तसव्वुर में गूंजता है 'असर'
वो चेहरा अब भी दिखाता है आईना मुझ कोज